RJPP, Vol. XXII, No.2, April - Sept. 24, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.858

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिकाः उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ

नेकीराम
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय
अतां, बारा (राजस्थान)
ईमेलः nekiram0071989@gmail.com

सारांश

स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। भारत की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। ऐसी सभ्यता या संस्कृति जो महिलाओं का सम्मान और आदर नहीं करती, उसे सभ्य नहीं माना जा सकता। भारत में नए कानून और विनियमों ने महिला सशक्तिकरण के अवसरों की संख्या में वृद्धि की है। देश के स्वतंत्र होने के बाद, महिलाओं को सार्वभौमिक मताधिकार भी प्रदान किया गया। फिर भी, लोकसभा और संसद में सेवारत महिलाओं का अनुपात उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। इससे राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है, और यह लेख इस प्रवृत्ति की जांच करता है। यह महिलाओं की राजनीतिक षक्ति के विकास और नारीवादी आंदोलन के इतिहास की जांच करता है। यह राजनीति में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व के संभावित कारकों की भी जांच करता है। निबंध में भारतीय महिलाओं की राजनीतिक उन्नति और भविष्य की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई है।

मुख्य बिन्दु

महिला सशक्तिकरण, राजनीति, मतदान अधिकार, सार्वजनिक कार्यालय, संसद, पंचायत, राजनीतिक दल

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 24.08.2024
Approved: 27.09.2024

नेकीराम

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिकाः उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ

RJPP April 24-Sept.24,
Vol. XXII, No. II,

PP. 153-160
Article No. 20

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2024-vol-xxii-no2

परिचय

भारत, एक प्राचीन संस्कृति लेकिन एक युवा देश, दुनिया के लोकतांत्रिक देशों में एक चमकदार उदाहरण है। इसका संविधान एक संकर है जो कई अंतरराष्ट्रीय संविधानों के सर्वोत्तम पहलुओं को जोड़ता है। भारतीय गणराज्य के स्वतंत्रता, समानता और न्याय के मूलभूत मूल्यों ने भारतीय महिलाओं को भविष्य के लिए आशावाद और सुरक्षा की भावना प्रदान की। हालाँकि, पूर्ण नागरिकता की उनकी महत्वाकांक्षा अभी तक साकार नहीं हुई है। संविधान के प्रगतिशील लक्ष्यों के बावजूद, यह लैंगिक भेदभाव की जटिलता को पूरी तरह से संबोधित करने में विफल रहा है। महिलाओं के बिना, एक संस्कृति सही ढंग से काम नहीं कर सकती। जब किसी राष्ट्र के भाग्य की बात आती है तो वे महत्वपूर्ण पात्र होते हैं। समाज की आर्थिक और राजनीतिक चिंताओं में उनकी भागीदारी के महत्व को कम करके आंकना असंभव है। हालाँकि, समाज का इतिहास दर्शाता है कि महिलाओं को वह सम्मान नहीं मिला है जिसकी वे हकदार हैं। भारत में महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न और सामाजिक बहिष्कार बहुत अधिक है। उनके खिलाफ लगातार सामाजिक कलंक जारी है, खासकर भारत जैसे कम विकसित देशों में। उनकी समानता ज्यादातर कागजों पर मौजूद है, वास्तविकता में नहीं। भारत जैसी सदी में, जब स्त्री रूप ही पूजा की अंतिम वस्तु है, महिलाओं के खिलाफ अपराधों में खतरनाक वृद्धि हैरान करने वाली है। राजनीति में महिलाओं से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण करते समय समाज में महिलाओं की स्थिति को समग्र रूप से संबोधित किया जाना चाहिए। कई मामलों में, जिस समाज में महिलाएँ शामिल हैं, उसके नियम और परंपराएँ पूरी तरह से उनके जीवन को प्रभावित करती हैं। महिलाओं को लंबे समय से अपने समाज की मान्यताओं, परंपराओं और रीति–रिवाजों को प्रसारित करने का काम सौंपा गया है। फिर भी, बच्चों को घर पर जो समाजीकरण मिलता है, वह उन्हें उन मानकों को संभालने के लिए तैयार नहीं करता है जो आदर्श से अलग हैं।

यह चिंताजनक है कि 60 से अधिक वर्षों के लोकतांत्रिक शासन के बावजूद, सरकार और अधिकारियों ने समाज को बेहतर बनाने के लिए वैधानिक अधिकारों को वास्तविक अधिकारों में नहीं बदला है। ऐतिहासिक राजनीतिक प्रणालियों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि महिलाओं को कभी भी राजनीतिक निर्णय लेने में शामिल नहीं किया गया है या उन्हें राजनीतिक मंच पर सीट नहीं दी गई है। यह आगे दर्शाता है कि कैसे अन्य संस्थागत संदर्भ महिलाओं की भागीदारी और योगदान को स्वीकार या महत्व नहीं देते हैं। गुणक प्रभाव होने के लिए, महिलाओं को निर्णय लेने में अब की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। शासी निकायों में उनकी भागीदारी हमेशा एक जैसी रही है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, पिछले तीन दशकों में चुनावी पद की चाह रखने वाली महिलाओं की संख्या एक जैसी रही है। ऐतिहासिक रूप से किसी भी विधायिका में कभी भी 15 प्रतिशत से अधिक महिला प्रतिनिधित्व नहीं रहा है।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की अनुपस्थिति के पीछे कारण

पितृसत्तात्मक संस्कृतियाँ – इस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हमारी पुरुष–प्रधान संस्कृति में मजबूत महिला नेताओं का सम्मान नहीं किया जाता है। जनमत का डर एक और मुद्दा है जो महिलाओं को राजनीतिक पद के लिए खड़े होने से रोकता है। जब पुरुष राजनीतिक

दलों पर शासन करते हैं, तो वे महिलाओं को अधिकार के पदों पर पदोन्नत करने की संभावना कम रखते हैं, जिसका उनके आत्मसम्मान पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है और अन्य महिलाओं को राजनीति में शामिल होने से हतोत्साहित कर सकता है। जब तक कोई महिला किसी राजनीतिक दल की स्थापना नहीं करती, तब तक हर राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से पुरुष–प्रधान होता है।

महिला राजनेताओं के खिलाफ हिंसा – भारत के अशांत इतिहास में महिला राजनेता विरोध, भेदभाव और यहां तक कि यातना का केंद्र रही हैं। सुश्री जयललिता पर हमला और सुश्री ममता बनर्जी पर यौन उत्पीड़नश मामले इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन महिला राजनेताओं को केवल महिला होने और राजनीति में बोलने के लिए डराने और अपमानित करने के लिए, उन पर हमला किया गया, ज्यादातर पुरुष कट्टरपंथियों द्वारा, उन्हें डराने और अपमानित करने के लिए। यह हिंसा भारत में महिलाओं को राजनीति में भाग लेने से रोकती है।

राजनीतिक क्षेत्र में व्यापक लैंगिक भेदभाव है – जब महिलाएं राजनीति में शामिल होती हैं, तो उन्हें अक्सर उन पदों तक सीमित कर दिया जाता है जो स्त्रीत्व के पारंपरिक विचारों के अनुरूप होते हैं –पुरुष राजनेताओं द्वारा शक्तिशाली पदों पर आसीन महिलाओं का अक्सर यौन उत्पीड़न किया जाता है। परिणामस्वरूप, नेतृत्व की भूमिकाएँ चाहने वाली महिलाएँ अक्सर हतोत्साहित महसूस करती हैं। हाल के वर्षों में, इस क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है, जैसे रक्षा और वित्त मंत्रालयों में महिलाओं को उच्च पद पर नियुक्त करना। हालाँकि, अभी भी और काम किया जाना बाकी है। मनोवैज्ञानिक कार्य कुल मिलाकर, भारतीय महिलाएँ राजनीतिक भागीदारी के प्रति उदासीन हैं। वे राजनीति में रुचि रखने, राजनीति पर चर्चा करने, राजनीतिक सभाओं में भाग लेने और राजनीतिक परिणामों को नियंत्रित करने के लिए काफी कम इच्छुक हैं। राजनीति लंबे समय से सत्ता की इच्छा और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बल का उपयोग करने की तत्परता से जुड़ी हुई है। राजनीति एक गंदा खेल है जिसमें सनकी और बेईमान व्यक्ति शामिल हैं, जैसा कि उसे अपने पूरे जीवन में सोचने के लिए तैयार किया गया है। रूढ़िवादी लिंग मानदंडों का पालन करने के सामाजिक दबाव के कारण, कई महिलाएँ राजनीतिक दलों में शामिल नहीं होना पसंद करती हैं। कई लोग पुरुषों की अपेक्षा करते हैं क्योंकि माना जाता है कि उनमें निष्पक्षता, आत्म–नियंत्रण, महत्वाकांक्षा और खुलेपन जैसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ होती हैं।

राजनीति में महिलाओं की उपलब्धि

मतदान अधिकार – मताधिकार के लिए एक राष्ट्रीय आंदोलन के जवाब में, महिलाओं के मताधिकार के लिए लड़ाई 1900 के दशक की षुरुआत में शुरू हुई, ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने 1947 तक अधिकांश पुरुषों और महिलाओं को मतदान का अधिकार नहीं दिया। 1950 में, जब भारत ने अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त की, तो इसके संविधान ने विशेष रूप से महिलाओं को वोट देने का

अधिकार दिया। सार्वभौमिक मताधिकार की शुरुआत से पहले, महिलाओं को केवल उन क्षेत्रों में वोट देने का अधिकार था जहाँ उनके लिए ऐसा करना वैध था। मद्रास में ब्रिटिश प्रशासन ने 1921 में महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया, लेकिन केवल तभी जब वे पंजीकृत संपत्ति की मालिक हों।मताधिकार आंदोलन के परिणामस्वरूप प्राप्त विशेषाधिकार केवल उन व्यक्तियों तक

सीमित थे जो साक्षरता और संपत्ति के स्वामित्व की पूर्वापेक्षाओं को पूरा करते थे, जिसमें उनके जीवनसाथी की संपत्ति का स्वामित्व भी शामिल था। अपनी गरीबी के कारण, अधिकांश भारतीय पुरुषों और महिलाओं को वोट देने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। 1950 में, सभी योग्य वयस्क भारतीयों को वोट देने का अधिकार दिया गया। 1950 में, सार्वभौमिक मताधिकार की सहायता से, महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया गया। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 326 इसे स्पष्ट करता है। राज्यसभा (उच्च सदन) और लोकसभा (निचला सदन) भारत की विधायी प्रणाली (उच्च सदन) का गठन करते हैं। 1984 में, 58.60 प्रतिशत पात्र मतदाताओं ने लोकसभा के चुनाव में भाग लिया, जबकि 1962 में यह संख्या 46.63 प्रतिशत थी। 1962 में, 63.31 प्रतिशत पुरुषों ने मतदान किया, जबकि 1984 में यह संख्या 68.18 प्रतिशत थी। चुनावों में लैंगिक अंतर 1962 में 16.7 प्रतिशत से घटकर 2009 में 4.4 प्रतिशत हो गया है। भारत में 2014 के आम विधान सभा चुनावों में, 67.09 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में केवल 65.63 प्रतिशत महिलाएँ मतदान के लिए पंजीकृत थीं। भारत के 29 राज्यों में से 16 में, पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाएँ मतदान के लिए पंजीकृत थीं। अप्रैल और मई 2014 में, 260. 6 मिलियन भारतीय महिलाओं ने देश के विधान सभा चुनावों में मतदान किया।

सार्वजनिक कार्यालयों में महिलाएँ – भारत में संचालन के लिए कोई एक संस्था जिम्मेदार नहीं हैय सरकार के कई स्तरों पर अधिकार वितरित किए गए हैं। राज्य विधानसभाओं और राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के सदस्य बड़े पैमाने पर चुने जाते हैं। 2012 में, भारत में निर्वाचित सांसदों की कुल संख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी 10.9 प्रतिशत थी, जो ब्राजील (9.6 प्रतिशत), हंगरी (8.8 प्रतिशत), मलेशिया (9.8 प्रतिशत) और चीन (9.6 प्रतिशत) के प्रतिशत से अधिक थी।

राजनीतिक गतिविधि के और भी महत्वपूर्ण संकेत हैं, जैसे कि सार्वजनिक कार्यालय के लिए दौड़ने वाली और राज्य स्तर पर विधायी सीटें रखने वाली महिलाओं की संख्या। विष्व आर्थिक मंच के वार्शिक वैष्विक लिंग अंतर सूचकांक अध्ययनों के अनुसार, जो इतने बड़े पैमाने पर विचार करते हैं, भारत लगातार दुनिया के षीर्श 20 देषों में षुमार रहा है, 2013 में नौवां सर्वश्रेश्ठ ग्रेड प्राप्त किया। भारत में राजनीति में किसी भी अन्य देष की तुलना में अधिक महिलाएं हैं, जिनमें यूनाइटेड किंगडम, डेनमार्क, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, फ्रांस और फ्रांस षामिल हैं।

पंचायती राज सुधार – 1993 में, भारतीय संविधान में 73वें संशोधन ने त्रिस्तरीय प्रणाली के साथ पंचायत की स्थापना, शक्तियों और जिम्मेदारियों के बारे में प्रावधान किए, यानी 20 लाख से कम आबादी वाले राज्यों में मध्यवर्ती स्तर को छोड़ने वाले प्रावधानों को छोड़कर, हर राज्य में गांव, मध्यवर्ती और जिला स्तर पर पंचायतें। राज्य कानून के अनुसार पंचायतों के गठन का निर्धारण करते हैं। बदलाव के हिस्से के रूप में, महिलाओं और सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों के सदस्यों को कोटा आवंटित किया गया था। इसने समाज के सभी वर्गों के लिए उपजिला स्तर पर प्रशासन और विकास में भागीदारी के अवसर पैदा किए हैं, जिनमें महिलाओं जैसे ऐतिहासिक रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले समूह भी शामिल हैं। महिला नगरपालिका प्रतिनिधियों की भारी वृद्धि में महिलाओं के लिए कोटा महत्वपूर्ण रहा है। भारत पंचायत सदस्यों के रूप में सेवा करने वाली महिलाओं के अनुपात पर नजर रखता है, और डेटा दर्शाता है कि स्थानीय स्तर पर 30 से 50 प्रतिशत प्रतिनिधि

महिलाएँ हैं। स्थानीय निकायों में महिलाओं का आरक्षण जबकि राजनीतिक नेतृत्व के पदों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है, उनकी संख्या बढ़ाने के लिए हमेशा से ही कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता रही है। महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में वैध उपस्थिति प्रदान करने के लिए एक मिसाल कायम करने के प्रयास में, 73वें और 74वें संविधान संशोधन अधिनियम ने स्थानीय निकायों, यानी नगर पालिकाओं और पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटें निर्धारित कीं। इन संशोधनों के बाद, संविधान में अनुच्छेद 243क और 243ज पेश किए गए ताकि यह सुनिष्चित किया जा सके कि महिलाओं को प्रत्यक्ष चुनाव के लिए उपलब्ध कुल स्थानीय सीटों में से कम से कम एक तिहाई सीटें सुनिश्चित की जाएँगी और ये सीटें अलग–अलग जिलों में बारी–बारी से दी जाएँगी। यह निर्णय लेने में महिलाओं के जमीनी स्तर पर प्रतिनिधित्व की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है। इसलिए, पिछले पंद्रह वर्षों के दौरान पंचायती राज के माध्यम से राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाले वंचित समुदायों की स्थिति में सुधार हुआ है। समुदाय के भीतर उनके द्वारा बनाए गए मजबूत संबंधों के परिणामस्वरूप, उनमें से कई ने अधिकार के पद संभाले हैं और वास्तविक सामाजिक परिवर्तन में मदद की है। कुछ मामलों में, महिलाएँ स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच पर ध्यान केंद्रित करके पूरे समुदाय की जीवन स्थितियों में सुधार करने में सक्षम रही हैं। आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, केरल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, त्रिपुरा और उत्तराखंड सहित कुछ राज्यों ने आरक्षण कोटा बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया है। केंद्र सरकार ने पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण प्रतिशत बढ़ाकर पचास प्रतिशत करने का सुझाव दिया है।

महिला आरक्षण विधेयक – उक्त विधेयक का मसौदा इस उद्देश्य से तैयार किया गया था कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में सभी सांसदों में से कम से कम एक तिहाई महिलाएँ हों। विधेयक के मुख्य खंडों के अनुसार, 108वें संविधान संशोधन विधेयक, 2008 के तहत संसद और राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें विशेष रूप से महिलाओं के लिए आरक्षित करने की योजना है।

विधेयक, 2008. संसद आरक्षित सीटें आवंटित करने के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण बनाएगी। अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति की महिलाओं को संसद और विधानसभा में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आवंटित सीटों की कुल संख्या का एक तिहाई हिस्सा दिया जाएगा। अलग–अलग राज्य या संघीय प्रादेशिक जिलों को परिक्रामी आधार पर आरक्षित सीटें आवंटित करना संभव है। इस अधिनियम के कानून बनने के 15 साल बाद महिलाओं के लिए कोटा खत्म हो जाएगा। जैसे ही अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण प्रदान करने के लिए संविधान में संशोध ान किए गए, 1996 के महिला आरक्षण विधेयक की समीक्षा करने वाली एक रिपोर्ट ने ओबीसी महिलाओं (ओबीसी) के लिए कोटा की सिफारिश की। इसने राज्यसभा के साथ–साथ विधानसभा में भी आरक्षण का विस्तार करने का प्रस्ताव रखा। इस बात पर जोर देना जरूरी है कि इन सिफारिशों को अभी विधेयक में शामिल किया जाना है।

वर्तमान उपलब्धियां और चुनौतियाँ – राजनीति में महिलाएँ

महिलाओं ने लगातार यह प्रदर्शित किया है कि वे उत्कृष्ट सामुदायिक विकासकर्ता हैं। चूँकि वे स्वाभाविक रूप से अंतर्दृष्टि, अंतर्ज्ञान और करुणा से सुसज्जित हैं, इसलिए वे लोगों की जरूरतों को समझने, प्रभावी सहायता देने और नेतृत्व की भूमिकाएँ अपनाने के लिए अच्छी तरह से अनुकूल हैं जो उनके अनुयायियों के विकास और विकास को प्रोत्साहित करती हैं। इसके अलावा, महिलाओं को सुसंगत सामाजिक समूह बनाने में पुरुषों की तुलना में अधिक कुशल दिखाया गया है। महिलाओं के लिए कार्यालय चलाना आसान बनाने वाले नियमों के बावजूद, सामाजिक और आर्थिक ताकतें उनके खिलाफ काम करना जारी रखती हैं। कभी–कभी, पति और अन्य पुरुष रिश्तेदार अपनी पत्नियों या अन्य महिला रिश्तेदारों को प्रॉक्सी के रूप में पेश करते हैं, जबकि वे वास्तविक नियंत्रण रखते हैं। इस पद्धति को पंचायत पाटी कहा जाता है। हालाँकि शहरी और समुदाय–आधारित संगठनों के शीर्ष पदों पर महिलाएँ अधिक प्रचलित पाई जाती हैं, जैसे कि मेयर, कॉरपोरेटर और नगरपालिका अधिकारी, पुरुष कर्मचारियों को कभी–कभी महिला नेताओं को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए अधिक समर्थन की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुरुष कर्मचारी आधिकारिक पदों पर महिला कर्मचारियों से भयभीत और नाराज महसूस करते हैं। जब विधानसभा और लोकसभा से जुड़े मामलों की बात आती है, तो महिलाओं को स्थानीय स्तर की तुलना में कहीं ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। चुनावी राजनीति के इस ज्यादा जटिल स्तर पर, राजनीति में पार्टियाँ, अपने सभी संगठनात्मक और आर्थिक संसाधनों के साथ, कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चुनावी राजनीति के लिए जरूरी पर्याप्त तैयारी के कारण, राजनीतिक पार्टियाँ शायद ही कभी जीतने योग्य सीटों के लिए महिला उम्मीदवारों को स्वीकार करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ जिलों पर ऐतिहासिक रूप से पुरुषों का नियंत्रण रहा है और इसलिए उन्हें सरकार की तलाश करने वाली महिलाओं के लिए अनुकूल नहीं माना जाता है। महिलाओं को अक्सर राजनीतिक अभियानों में सहायक पदों पर रखा जाता है, और जब पार्टी की संभावनाएँ अनिश्चित होती हैं, तो उनकी उम्मीदवारी को आम तौर पर कम सुरक्षित सीटों के लिए समर्थन दिया जाता है। इस तथ्य के कारण कि उन्हें राजनीति में एक अनौपचारिक लड़कों के क्लब के पुरुष सदस्यों के पास जितना समर्थन मिलने की संभावना कम है, महिलाओं को आम तौर पर बड़ी संख्या में पुरुष उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ने पर नुकसान उठाना पड़ता है। यह व्यापक शत्रुता महिलाओं के मतदान अधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनों की चल रही आलोचना में सबसे अधिक स्पष्ट है। 1996, 1998, 1999 और 2002 में ऐसे विधेयक प्रस्तावित किए गए थे, जो महिलाओं को लोकसभा की एक तिहाई सीटों पर चुनाव लड़ने की अनुमति देते, लेकिन उन्हें अभी तक मंजूरी नहीं मिली थी। राज्य सभा ने 2010 में संवैधानिक (108वां संशोधन) विधेयक को अपने वर्तमान स्वरूप में पारित किया, जिसमें वामपंथियों और भारतीय जनता पार्टी का महत्वपूर्ण समर्थन था। दुर्भाग्य से, यह लोकसभा में पारित नहीं हो सका और एक बार फिर अप्रभावी हो गया। इस तथ्य के बावजूद कि सदन के अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और यहां तक कि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति सहित राजनीतिक प्राधिकरण के पद महिलाओं के पास रहे हैं, एक उग्र पितृसत्ता राजनीतिक शक्ति के अधिक न्यायसंगत वितरण का विरोध करने के लिए बनी हुई है। राजनीतिक पद के लिए अभियान भी महंगा है, जैसा कि कोई भी गंभीर पर्यवेक्षक

पुष्टि करेगा। दूर करने के लिए एक और बाधा यह तथ्य है कि महिलाओं का अक्सर पुरुषों की तुलना में कम आर्थिक प्रभाव होता है। फिर भी, सार्वजनिक पद की तलाश करने वाली अधिकांश महिलाओं को या तो अपनी या अपने परिवार की संपत्ति का उपयोग करना पड़ता है या अपने साथियों के योगदान पर निर्भर रहना पड़ता है। आधुनिक राजनीतिक समय नई कठिनाइयाँ प्रदान करता है। राजनीतिक युद्धक्षेत्र पारंपरिक मैदान से हटकर व्हाट्सएप ग्रुप और ट्विटर जैसी सोशल मीडिया वेबसाइट जैसे ऑनलाइन स्थानों पर आ गए हैं, जिससे चुनाव प्रचार में आमूलचूल परिवर्तन आया है। एक विश्वसनीय उम्मीदवार को केवल एक संगठित और प्रायोजित डिजिटल आउटरीच अभियान के माध्यम से ही चुना जा सकता है, जिसका समन्वय आज सरकार के उच्चतम स्तरों पर किया जाता है। पुरुष आवेदकों के पास इस कार्य को पूरा करने के लिए समय, ऊर्जा और संसाधन होने की अधिक संभावना है।

15वीं लोकसभा में संसद सदस्य के रूप में काम करने वाली 59 महिलाओं में से 41 के पास स्नातक या उससे अधिक की डिग्री थी, जो यह साबित करता है कि ऐतिहासिक रूप से, महिला विधायकों के पास पुरुषों की तुलना में शिक्षा का औसत स्तर अधिक रहा है। फिर भी, उन्हें अभिनव विज्ञापन रणनीतियों को ठीक से लागू करने के लिए अधिक संसाधनों और सहायता की आवश्यकता है। बीआर अंबेडकर के अनुसार, सामाजिक प्रगति की आधारशिला राजनीतिक षक्ति है। नीति निर्माता अक्सर मानते हैं कि महिलाओं के सशक्तीकरण की चिंताओं से निपटने को सरल बनाया जा सकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाओं को विधायिका में समान प्रतिनिधित्व मिले। एक प्रगतिशील समाज की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए जहां सभी को अवसरों तक समान पहुंच हो और महिला संगठनों को मजबूत करने के लिए, राजनीतिक और आर्थिक निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी की प्रासंगिकता को समझना महत्वपूर्ण है। पुरुष राजनेताओं को असमानता को बनाए रखने वाले दृष्टिकोणों को संबोधित करने में पहल करनी चाहिए, और उन्हें अपनी महिला सहयोगियों द्वारा किए गए अपमानजनक बयानों को सख्ती से खारिज करना चाहिए। सतत विकास लक्ष्यों के उद्देश्य 5में निम्नलिखित राजनीतिक, आर्थिक और सार्वजनिक उद्देश्य हैं – सुनिश्चित करें कि महिलाओं को प्रशासन के सभी स्तरों पर शक्ति के वितरण में समानता मिले और उन्हें इन भूमिकाओं में पूरी तरह से शामिल होने का हर मौका दिया जाए। पृथ्वी पर सभी को इसे वास्तविकता बनाने के लिए सहयोग करना चाहिए (एसडीजी लक्ष्य 17– लक्ष्यों के लिए भागीदारी)। राजनीति में लैंगिक भेदभाव के मुद्दे का कोई सार्वभौमिक उत्तर नहीं है। फिर भी, महिलाओं की आवाज को बढ़ाने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है और किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर देश की आजादी के बाद से ही शोध किया जा रहा है। पिछले दो दशकों में सरकार के विकेंद्रीकरण के मद्देनजर, निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी का आकलन करना अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय सरकार सामाजिक संकेतकों पर बेहतर ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए रीयलटाइम डेटासेट एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने को प्राथमिकता देती है। लिंग बजट में सुधार के प्रयासों का उद्देश्य महिलाओं की भागीदारी पर

अधिक सटीक डेटा एकत्र करके और उसका मूल्यांकन करके महिलाओं की समानता को बढ़ाना है। समाज और सरकार के प्रत्येक चरण में, सभी कार्यक्रम वित्तपोषण का एक तिहाई हिस्सा पहले से ही महिलाओं के लिए समर्पित है। इस तथ्य के बावजूद कि प्रत्येक देश की राजनीतिक प्रणाली की अपनी अनूठी विशिष्टताएँ हैं, यह हमेशा महिलाओं की भागीदारी के लिए अन्यायपूर्ण और अनिच्छुक होती है। राजनीति में शामिल होने का प्रयास करते समय महिलाओं को दुनिया भर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाइयाँ हमारी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्थाओं और सामाजिक तथा आर्थिक संरचनाओं में अंतर्निहित हैं। भारत की स्थिति में, एक महिला का पारिवारिक इतिहास उसके सार्वजनिक करियर के लिए महत्वपूर्ण है। अधिकांश महिलाएँ सार्वजनिक पद पाने के लिए आवश्यक प्रयास करने में झिझकती हैं। उनमें से कुछ ही प्रमुख सरकारी नौकरियाँ रखती हैं। महिलाओं और पुरुषों के पास मतदाताओं, प्रचारकों, उम्मीदवारों और पार्टी पदाधिकारियों की एक इकाई के रूप में राजनीतिक क्षेत्र में शामिल होने की समान संभावनाएँ हैं।

संदर्भ

1. चारी, मरोजू राम, "भारत में महिलाएँ और राजनीतिक भागीदारीः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।" द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 73, नंबर 1 (2012):119–32
2. ईपीडब्ल्यू एंगेज, "भारतीय राजनीति में महिलाएँ कहाँ हैं", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, (2019)
3. खन्ना, मनुका, "भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी", द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 70, नंबर 1 (2009): 55–64
4. कुमारमंगलम, ललिता, "भारतीय राजनीति में महिलाएँ", शांति और संघर्ष अध्ययन संस्थान, (2018)
5. पद्मिनी सेन गुप्ता, भारत की महिलाओं की कहानी, नई दिल्लीः इंडिया बुक कंपनी, 1974
6. पंखुड़ी भट्ट, भारत की राज्य विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व, समविधि, 11 जुलाई, 2021, पीआरएस इंडिया।
7. रश्मि श्रीवास्तव, भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका, राजनीति विज्ञान समीक्षा, खंड 21, संख्या 4, 1982।
8. सादिया, हुसैन, संसद में महिलाओं का प्रदर्शन, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 57, अंक संख्या 31, 30 जुलाई, 2022।
9. शिरीन एम राय और कैरोल स्प्रे, प्रदर्शन प्रतिनिधित्वः भारतीय संसद में महिला सदस्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019।
10. थानिकोडी, ए, और सुगिरथा, एम, राजनीति में महिलाओं की स्थिति, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 68, संख्या 3 (2007): 589–606.
11. भारत का संविधान, स्मारक संस्करण, विधि मंत्रालय, भारत सरकार, 1973.